

डॉ. मार्व विल्सन, भविष्यवक्ता, सत्र 6, भविष्यवक्ताओं को समझने के लिए व्याख्यात्मक सिद्धांत

भाग 2

© 2024 मार्व विल्सन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्व विल्सन द्वारा पैगंबरों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 6 है, पैगंबरों को समझने के लिए हेर्मेनेयुटिकल सिद्धांत, भाग 2।

ठीक है, मैं शुरू करने के लिए तैयार हूँ। आइए कक्षा शुरू करने से पहले प्रार्थना करें। हे प्रभु, हम प्रतिदिन कई बार आपकी ओर देखते हैं, यह स्वीकार करने के लिए कि आप हमारे जीपीएस हैं। हम कई बार राजमार्ग, सड़क, जीवन के मार्ग से भटक जाते हैं, यहाँ तक कि गलियों और खाई में भी गिर जाते हैं, लेकिन हम आपको धन्यवाद देते हैं कि आप हमें जीवन के मुख्य मार्ग पर वापस लाने और चलते रहने के लिए बुलाते हैं। हम आपको धन्यवाद देते हैं कि यही हमारा आह्वान है, कि वह सड़क हमें कहीं ले जा रही है।

हम आपको धन्यवाद देते हैं कि हिब्रू शास्त्र लक्ष्य-उन्मुख हैं, कि वे हमें इस विश्वास की ओर ले जाते हैं कि अन्याय और अधर्म और असफलताएँ और इस जीवन में शांति प्राप्त करने की कमी केवल अस्थायी बाधाएँ हैं। वास्तव में, अंततः, हम दुनिया के पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के सपने का अनुभव करेंगे जो ईश्वर के ज्ञान से ढके हुए हैं जैसे पानी समुद्र को ढकता है। वास्तव में, युद्ध समाप्त हो जाएगा और आपका शालोम पूरी मानवता पर फैल जाएगा।

उस दर्शन के साथ, हम आपको धन्यवाद देते हैं कि आपने हमें मेल-मिलाप, न्याय और आशा के लोग बनने के लिए बुलाया है। तो, क्या भविष्यवक्ताओं का वह दर्शन आज हमारे व्यक्तिगत जीवन में हमारी व्यक्तिगत दुनिया की विशेषता बन सकता है? मैं अपने प्रभु मसीह के माध्यम से यह प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

ठीक है, क्या आपके पास मेरे पिछले व्याख्यान से कोई प्रश्न, टिप्पणी या कुछ पूछना है? मैं आपको वह अवसर देता हूँ। ठीक है, हम कुछ व्यापक दिशा-निर्देशों, व्याख्यात्मक सिद्धांतों के बारे में बात कर रहे हैं जो हमें भविष्यवक्ताओं की अच्छी समझ बनाने में मदद करेंगे। शास्त्रों की सही व्याख्या करना विज्ञान से कहीं ज़्यादा कुशली के मुकाबले जैसा है।

यह कुछ खास तरह की चीजों के प्रति संवेदनशीलता रखने की क्षमता से कहीं ज़्यादा है। वास्तव में, यह विज्ञान से कहीं ज़्यादा एक कला है। और इसलिए, यह 1, 2, 3, ए, बी, सी लागू करने का मामला नहीं है, और आपको हमेशा एक ही जवाब मिलता है।

ठीक है, पिछली बार, मैंने चर्च में लोगों द्वारा इज़राइल के प्रश्न को किस तरह से देखा गया है, इस बारे में कुछ व्यापक दृष्टिकोणों के बारे में बात की थी, विशेष रूप से भविष्यवादी, भविष्यसूचक

प्रवचनों में। जैसा कि मैंने कई बार कहा है, भविष्यसूचक शिक्षा का बड़ा हिस्सा यहाँ और अभी से संबंधित है। भविष्यवक्ता समाज सुधारक थे।

वे अपने समाज के बारे में चिंतित थे। लेकिन यह हमेशा एक आदर्शवाद के साथ संतुलित था कि वर्तमान में जो कुछ भी देखा जाता है वह चीजों की भव्य योजना में केवल अस्थायी है। कि अंततः, ईश्वर, अपने मसीहा के माध्यम से, शासन करेगा।

अब, बाइबिल की भविष्यवाणी की कथा को देखते हुए, मैं एक और सिद्धांत पर आना चाहता हूँ। पिछली बार, मैंने कहा था, मुझे लगता है कि जिस तरह से हम ऐसा करना चाहते हैं वह पुराने नियम से शुरू करना है, फिर नए नियम पर जाना है, और अगर परमेश्वर के पास रहस्योद्घाटन या शिक्षा का कोई और वचन है, तो हम उसे पुराने नियम की अपनी समझ में वापस ला सकते हैं। लेकिन मुझे वास्तव में लगता है कि हम पुराने नियम के साथ अन्याय करते हैं, और आम तौर पर, चर्च के इतिहास में, अगर हमारी कार्यप्रणाली सबसे शुरुआती चर्च की कार्यप्रणाली नहीं है, तो इसे अन्याय दिया गया है।

आप यहूदी धर्मग्रंथों से शुरू करते हैं, जो अपने आप में प्रभु की ओर से एक वचन हैं, और यदि परमेश्वर के पास अतिरिक्त चीजें हैं जो वह उस पर डालना चाहता है, तो ऐसा करें। लेकिन यहाँ, मूल वचन, अपने स्वयं के संदर्भ में, अपनी स्वयं की सेटिंग में, अपनी स्वयं की वसीयत में। अगला सिद्धांत यह ध्यान में रखना है कि भविष्यवाणी का अधिकांश भाग कविता है।

हम सीधे-सादे ऐतिहासिक आख्यान से निपट नहीं रहे हैं। वास्तव में, पुराने नियम का लगभग एक तिहाई हिस्सा कविता है। पुरानी कहावत याद रखें: हिब्रू लोग शब्द शिल्पी थे।

और शब्दों के शिल्पी होने के नाते, कहने लायक कोई भी बात खूबसूरती से कहने लायक होती है। और इसलिए एक बहुत ही मौखिक संस्कृति में चीजों को इस तरह कहने की प्रवृत्ति थी कि वे यादगार हों। और इसलिए कविता की समानांतर पंक्तियाँ, स्वर-स्वर, सिसकारी का उपयोग, ओनोमेटोपोएटिक अभिव्यक्तियाँ, उपमाएँ, रूपक, ये सभी हमें याद दिलाते हैं कि हम भाषण के अलंकारों के साथ कहाँ काम कर रहे हैं, और हम अक्सर प्राच्य अतिशयोक्ति के साथ काम कर रहे हैं।

यहाँ तक कि पिता अब्राहम, जिन्हें बाइबल नबी / नवी के रूप में वर्णित करती है, एक भविष्यवक्ता के रूप में, अब्राहमिक कथा में तीन बार, परमेश्वर वर्णन करता है कि बहुतों के पिता अब्राहम के वंशज क्या होंगे। वह कहता है, वे आकाश के तारों की तरह होंगे, वे समुद्र तट पर रेत की तरह होंगे, और वे पृथ्वी पर धूल की तरह होंगे। अब्राहम के कई बच्चे होने के बारे में कहने के लिए तीन विवरण हैं।

अब, आप और मैं उस विस्तारित अब्राहमिक परिवार का हिस्सा हैं, प्राकृतिक बीज, भौतिक बीज के माध्यम से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक बीज के माध्यम से। लेकिन एक बहुत ही अनिश्चित तस्वीर है कि उनमें से बहुत से लोग उस तरह की आलंकारिक भाषा का उपयोग करेंगे। खैर, यह भविष्यवक्ताओं में बहुत सी सामग्री की खासियत है।

इसलिए, भाषा में वह सटीकता नहीं है जो एक सीधे-सादे ऐतिहासिक वर्णन में पाई जा सकती है। इसलिए, हमें इसे ध्यान में रखना चाहिए। हिब्रू भाषा भाषा के साथ शब्द चित्र बना रही है, और अक्सर सटीकता में उतनी दिलचस्पी नहीं रखती जितनी व्यापक अवधारणा को समझने में हमारी मदद करती है।

एक और बात जो महत्वपूर्ण है जब हम भविष्यवाणी साहित्य का अध्ययन करते हैं, तो दिन के अंत में यह ध्यान में रखना है कि यह व्यक्ति-केंद्रित है, घटना-केंद्रित नहीं। मुझे लगता है कि भविष्यवाणी को समझने के लिए व्यवस्थागत दृष्टिकोण की समस्याओं में से एक यह है कि इसकी शुरुआत से ही घटनाओं की एक अनुक्रमिक श्रृंखला को एक सटीक क्रम में निर्धारित करना और चार्ट करना है। और इसलिए इस बात पर बड़ी बहस होती थी कि प्रभु को क्लेश से पहले क्यों आना है, बजाय इसके कि जिस व्यक्ति के नाम पर कैम्पस में फ़ेरेन हॉल का नाम रखा गया है, वह एक मध्य-क्लेशवादी था।

प्रभु का आगमन साढ़े तीन साल बाद होगा। सात साल की अवधि के ठीक बीच में, जिसे जैकब के संकट का समय कहा जाता है। और फिर गॉर्डन के सबसे प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों में से एक, जिसका मुख्य, जिसका जीवन का मुख्य फोकस परलोक विद्या और ईश्वर का राज्य था, जॉर्ज लैड, जिसकी यहाँ हमारे पुस्तकालय में एक पुस्तक है, जिसमें कहा गया है कि सात साल की अवधि समाप्त होने के बाद क्लेश के बाद प्रभु का आगमन होगा।

तो आपके पास इतने सारे दृष्टिकोण हैं और लोग बहुत सारी ऊर्जा, बहुत सारे तर्क, इन चीजों के समय के बारे में बहुत सारी बहस कर सकते हैं, जहाँ बाइबल का ध्यान कब पर नहीं बल्कि कौन पर है। एस्कैटोलॉजी मुख्य रूप से एक व्यक्ति पर केंद्रित है।

यह वही है जिसके बारे में एडवेंट है। और जब आप तीन नए नियम के शब्दों को लेते हैं जो पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं द्वारा लिखी गई बातों के चरमोत्कर्ष पर केंद्रित हैं, तो वे सभी एक व्यक्ति से संबंधित हैं। एपिफेनिया, मसीह का प्रकटीकरण या प्रकट होना।

पारूसिया, जिसका शाब्दिक अर्थ है साथ रहना, का अनुवाद आगमन के रूप में किया जा सकता है। पारूसिया, मसीह का आगमन, दूसरा आगमन। और फिर, ज़ाहिर है, तीसरा शब्द, सर्वनाश, जो रहस्योद्घाटन है।

स्वर्ग से परमेश्वर के पुत्र का प्रकाशन। इसलिए, 1 यूहन्ना में नए नियम के अंत में उस छोटे से पत्र में जो जोर दिया गया है, हम उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है, और हर कोई जो अपने आप में वह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही शुद्ध करता है जैसा वह शुद्ध है। तो, कौन सी आशा है? उसके आने की आशा।

इसलिए, एस्कैटोलॉजी बहुत हद तक व्यक्ति-केंद्रित है, घटना-केंद्रित नहीं। और आप गलत संगति में हैं यदि वे यह समझने में बहुत समय लगाते हैं कि हम अंत के कितने करीब हैं, बजाय इसके कि वे इस बारे में बात करें कि नया नियम क्या धन्य आशा कहता है। यह वह शीर्षक था जिसे 20वीं सदी के सबसे संतुलित इंजील एस्कैटोलॉजिस्ट में से एक जॉर्ज लैड ने अपनी एक

किताब, द ब्लेस्ड होप एंड ग्लोरियस अपीयरिंग ऑफ अवर सेवियर जीसस क्राइस्ट के शीर्षक के लिए इस्तेमाल किया था।

ठीक है, यही धन्य आशा है। यह एक व्यक्ति, मसीह में लिपटी हुई है। जब आप बाइबल की भविष्यवाणी की शैली में आते हैं, तो मैं एक और जोर देना चाहता हूँ, हम भविष्यवाणी की व्याख्या कैसे करते हैं, यह कभी भी संगति के लिए एक परीक्षा नहीं बननी चाहिए।

अब यह आप में से कुछ लोगों को बहुत अजीब लग सकता है। लेकिन जब मैं अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी कर रहा था और ऐसी जगहों की तलाश कर रहा था जहाँ मैं पढ़ा सकता था, तो एक विशेष धर्मशास्त्रीय सेमिनरी मेरे दिमाग में आई और मैंने उनके अध्ययनों की सूची और उनके विश्वास के कथन को देखा। और उनके पास हिब्रू बाइबिल से, हमारे पुराने नियम की भविष्यवाणी सामग्री से कुछ बहुत ही सटीक बातें थीं।

एक ऐसा अध्याय जिसके बारे में शायद आप में से बहुतों ने कभी नहीं सुना होगा, वह है दानिय्येल के 70 सप्ताह। और आपको यह समझना होगा कि धर्मशास्त्रीय संकाय में होने का एक विशेष तरीका क्या है। मेरी राय में, यह थोड़ा ज़्यादा हो गया है।

सिर्फ धर्मशास्त्र संकायों के लिए ही नहीं, बल्कि अगर लोगों के पास ऐसे बयान हैं जो स्थानीय संगति में विश्वासियों को एक साथ बांधते हैं। फिर से, ऑगस्टीन की उक्ति बहुत अच्छी है। आप जहाँ भी जाएँ, इसे नहीं भूलना चाहिए।

अनिवार्य रूप से एकता, गैर-आवश्यक रूप से स्वतंत्रता, लेकिन सभी चीजों में दान। अनिवार्य रूप से एकता, गैर-आवश्यक रूप से स्वतंत्रता, लेकिन सभी चीजों में दान। मुद्दा यह है कि अनिवार्य रूप से क्या हैं? और मैं कहूँगा कि चर्च के इतिहास में, जैसा कि हमारे यहूदी मित्र हिब्रू बाइबिल की पूरी कहानी के चरमोत्कर्ष को देखते हैं, इस धरती पर धार्मिकता, शांति और मेल-मिलाप के युग का, जो मसीहा नामक अंतिम समय के व्यक्ति से जुड़ा हुआ है।

इसलिए, ईसाई भी इसी बात के बारे में सोचते हैं। हम इन चीजों की बारीकियों को कैसे समझते हैं, यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है। वास्तव में, वे अक्सर विभाजनकारी हो जाते हैं।

या, जैसा कि हर्नेक कहा करते थे, चर्च पूरी तरह से ज़ेरस्पेल्टेन है, पूरी तरह से विभाजित है, खंडित है। कभी-कभी मैं सिद्धांत के छोटे-छोटे बिंदुओं को कहूँगा। ऐसे बिंदु जिनके बारे में बहुत से बहुत ही ईमानदार विश्वासियों के बीच मतभेद हैं कि वे कुछ ग्रंथों की व्याख्या कैसे करते हैं या उन्हें कैसे पढ़ते हैं।

इसलिए, हम भविष्यवाणी की व्याख्या कैसे करते हैं, यह संगति के लिए एक परीक्षा नहीं होनी चाहिए। मुझे लगता है कि हमें अपनी विश्वास प्रणाली को, ईसाइयों के रूप में, सबसे सरल शब्दों में प्रस्तुत करना चाहिए: युग के अंत में महिमा में मसीह की बस व्यक्तिगत, दृश्यमान वापसी। यह बहुत हद तक आवश्यक, ऐतिहासिक, इंजील, रूढ़िवादी, बुनियादी प्रतिबद्धता को दर्शाता है जो हमें एक साथ बांधता है।

अब, यदि आप इसके अंतर्गत बिंदु और उप-बिंदु जोड़ना शुरू करना चाहते हैं, तो यह समस्याग्रस्त हो सकता है। इसलिए, यह संगति के लिए एक परीक्षा नहीं होनी चाहिए। मुझे लगता है कि पुनरुत्थान में विश्वास उस करिश्माई पैकेज का हिस्सा हो सकता है जिसे आप एक साथ रखते हैं।

अर्थात्, आरंभिक चर्च ने आस्था के समुदाय के रूप में क्या घोषणा की और किसका प्रचार किया? 1 कुरिन्थियों 15, 3, और 4 में पाए जाने वाले सुसमाचार संदेश के आवश्यक मूल तत्व क्या थे? कैसे मसीह हमारे पापों के लिए मरा, दफनाया गया, और शास्त्रों के अनुसार तीसरे दिन फिर से जी उठा। या जैसा कि रोमियों में पौलुस ने कहा है, कैसे उसे मृतकों के पुनरुत्थान के माध्यम से सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र घोषित किया गया है। और यदि आप स्वीकार करते हैं कि यीशु मर गया है और फिर से जी उठा है, तो आप बच जाएँगे।

मुझे लगता है कि ईसाइयों के लिए ऐतिहासिक रूप से पुनरुत्थान, नए नियम से, भविष्य से जुड़े अंतिम समय के पैकेज का हिस्सा रहा है। क्योंकि यह मसीह की वापसी के साथ होता है। जैसा कि 1 थिस्सलुनीकियों में कहा गया है।

इसलिए, 1 थिस्सलुनीकियों को कुछ हद तक शुरुआती विश्वासियों को सांत्वना देने के लिए लिखा गया था। उनमें से कुछ को लगा कि उनका आंदोलन विफल हो गया है। यीशु की मृत्यु हो गई थी, लेकिन फिर भी पुनर्मिलन की आशा थी।

जो लोग मर चुके थे और सो रहे थे, वे मसीह के स्वर्ग से लौटने पर जी उठेंगे। ठीक है, यही आशा है - मसीह का जल्द लौटना।

यही अंतिम समय है, और यह व्यक्ति-केंद्रित है। हमें अन्य चीजों का अध्ययन करना चाहिए। वे बड़ी तस्वीर को स्पष्ट करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

लेकिन आप किसी को इसलिए बहिष्कृत नहीं कर सकते क्योंकि हमारे बीच अंत समय से संबंधित घटनाओं या मसीह के वापस आने के समय के बारे में मतभेद हैं - यह व्याख्याशास्त्र का एक और बिंदु है। याद रखें, नया नियम कभी-कभी पुराने नियम के पाठों की इस तरह से पुनर्व्याख्या करता है जिसे पहले विश्वासियों ने शुरू में हमेशा नहीं समझा होगा।

पॉल टोरा और अपने पूर्वजों की यात्रा पर विचार कर सकता है, और वैसे, आपके पूर्वजों और मेरे पूर्वजों की यात्रा पर भी। जब आप 1 कुरिन्थियों अध्याय 10 पढ़ते हैं तो मत भूलिए। यह यहूदी लोग नहीं हैं जो लाल सागर के पानी से आए थे।

यह चर्च में सभी के पूर्वज हैं, यहूदी और गैर-यहूदी। हमारे पूर्वज, पॉल ने कुरिन्थियों को लिखा। इसलिए, जब हमारे पूर्वज लाल सागर के पानी से होकर आए और सिनाई प्रायद्वीप में भटकने लगे और उन्हें पानी की ज़रूरत थी क्योंकि यह एक सूखा और शुष्क देश था, और उन्होंने चट्टान से पानी लिया, तो पॉल ने कहा, वह चट्टान मसीह था।

उनके पास यह बहुत ही सहज, व्याख्यात्मक समझ थी, जहाँ उन्होंने पूरी कहानी को मसीह की ओर इशारा करते हुए देखा जो आध्यात्मिक प्यास बुझा सकता था। वह जिसने कहा कि उसके पास जीवन का जल है, या जॉन के सुसमाचार के शब्दों का उपयोग करते हुए जीवित जल है। और इसलिए, हमारे पास इनमें से कुछ आश्चर्यजनक क्षण हैं।

संभवतः इनमें से कुछ ग्रंथों के मूल लेखकों को इस बात की बहुत कम समझ थी कि इन ग्रंथों का व्यापक पाठ कैसे किया जाएगा। एक और उदाहरण है रोमियों अध्याय 9, श्लोक 24-26। हम कुछ व्याख्यानों में होशे के बारे में बात करेंगे।

और यहाँ, पौलुस कहता है, हम भी जिन्हें उसने बुलाया है, न केवल यहूदियों में से बल्कि अन्यजातियों में से भी। जैसा कि वह होशे में कहता है, मैं उन्हें अपने लोग कहूँगा जो मेरे लोग नहीं हैं। मैं उसे अपना प्रिय कहूँगा जो मेरा प्रिय नहीं है।

और ऐसा होगा कि उसी जगह जहाँ उनसे कहा गया था, यानी, इस्राएल, तुम मेरे लोग नहीं हो, वे जीवित परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे। क्षमा करने वाले, बहाल करने वाले और बचाने वाले परमेश्वर का विचार, अर्थ और सिद्धांत अब अन्यजातियों पर लागू होता है। लेकिन मूल संदर्भ, जब आप होशे में देखते हैं, तो वह अन्यजातियों के बारे में बिल्कुल भी बात नहीं कर रहा है।

यह राष्ट्रीय, भौतिक, सांसारिक इस्राएल के बारे में बात कर रहा है, जो उत्तरी राज्य में मूर्तिपूजक था, बाल की पूजा करता था। और परमेश्वर अपने लोगों के साथ अपने रिश्ते को अस्थायी रूप से तोड़ने की बात करता है। और ऐसा ही है, लेकिन फिर उसका प्यार शाश्वत है।

वह उन्हें वापस ले लेता है और उन्हें पुनर्स्थापित करता है। इसलिए, सामान्य सिद्धांत, यानी स्पष्ट रूप से संकेत देने या स्पष्ट होने के बजाय, जो होशे का संदर्भ है। नए नियम का लेखक होशे के अपने सांसारिक लोगों, इस्राएल के अनुप्रयोग के संदर्भ के साथ विशेष रूप से चिपके रहने के बजाय एक व्यापक विचार के लिए जाता है।

इसलिए, पॉल उस सिद्धांत को आगे बढ़ाते हैं। नए नियम के लेखक पुराने नियम के पाठों का किस तरह उपयोग करते हैं, यह आधुनिक 20वीं और 21वीं सदी के व्याख्यात्मक शोध-पत्र के लेखन के निर्णय में तनावपूर्ण, कठिन और असमर्थनीय हो सकता है। पाठ ऐसा नहीं कहता प्रतीत होता है।

लेकिन जैसा कि जॉन ब्राइट कहते हैं, जैसा कि आप जॉन ब्राइट को पढ़ते हैं, अगर आपने कभी द ऑर्थोरिटी ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट में जॉन ब्राइट को पढ़ा है, तो वे उस पुस्तक में कहते हैं, आप जानते हैं, पवित्र आत्मा के माध्यम से उन लेखकों का उपयोग करने वाले परमेश्वर कभी-कभी बाइबल की व्याख्या करने के अच्छे मानक सिद्धांतों से परे चले जाते हैं। इसलिए, आप पवित्र आत्मा के उद्देश्य पर सवाल नहीं उठा सकते। अगर पवित्र आत्मा ने पॉल से कहा कि जंगल में चट्टान मसीह है, तो यह मसीह है क्योंकि मेरे पास जंगल में उस घटना पर एक आधिकारिक न्यू टेस्टामेंट टिप्पणी है।

लेकिन फिर से, यह बड़ी तस्वीर की खासियत है। नए नियम के हर लेखक की इच्छा इस कहानी को उसके चरमोत्कर्ष पर पहुँचते देखने की है। पुराने नियम की इस तरह की छायाएँ और पैटर्न अब एक बड़ी कहानी में एक साथ इकट्ठे हो रहे हैं।

और इसलिए, हम इन पाठों के अर्थ के विस्तार को देख सकते हैं। योएल 2 की भविष्यवाणी, जिस पर हम नज़र डालेंगे। योएल पिनतेकुस्त का भविष्यवक्ता था।

क्यों? जब पतरस उठता है और प्रेरितों के काम 2 में चर्च के जन्म के दिन उपदेश देता है, तो वह योएल 2 को उद्धृत करता है कि परमेश्वर सभी प्राणियों पर अपनी आत्मा उंडेलता है। खैर, वहाँ श्रोता कौन थे? वहाँ के श्रोता, कम से कम हम प्रेरितों के काम 2 से जानते हैं, जिन्होंने विशेष रूप से पतरस के संदेश पर प्रतिक्रिया व्यक्त की, वे उसके साथी यहूदी देशवासी थे। उनमें से 3,000 को मिक्केहोट में डुबोया गया, या उन्होंने खुद को डुबो लिया।

संभवतः वे लोग जिन्हें आप अब पश्चिमी दीवार पर देख रहे हैं। मंदिर पर्वत का दक्षिण-पश्चिमी भाग। वे सभी प्राणी हैं, हालाँकि योएल के मूल श्रोता स्पष्ट रूप से यहूदी थे जिन्होंने उस संदेश को सुना था।

लेकिन जोएल कह रहा है कि उस संदेश का अनुप्रयोग यही है। 20 या उससे ज़्यादा साल बाद गैर-यहूदी, तकनीकी रूप से, गैर-यहूदी, सभी प्राणी, जैतून के पेड़ के संबंध में जंगली जैतून की शाखाओं के रूप में प्रतिक्रिया करेंगे जो अब इज़राइल में कलम लगाई गई हैं। तो, यह तब शुरू हुआ, और इसलिए हमें इसे शायद एक प्रगतिशील कार्य के रूप में देखना चाहिए।

इसलिए, नया नियम कभी-कभी कुछ पुराने नियम के पाठों की पुनर्व्याख्या करता है। और निश्चित रूप से, यह मसीहा के बारे में सच था, है न? जब यीशु आए तो लोगों की अपेक्षा योद्धा, नायक, सैन्य चैंपियन और राजनीतिक व्यक्ति की थी। जाहिर है कि लोग अस्तित्वगत रूप से यही चाहते थे क्योंकि वे रोम के पंजे के नीचे तड़प रहे थे।

जब यीशु ने यह कहने की हिम्मत की, कि मेरा राज्य इस दुनिया का नहीं है, तो लोगों ने शायद अपना सिर खुजलाया और कहा, तुम किस तरह के मसीहा हो? यह उस तरह का मसीहा नहीं है जिसके बारे में हम हिब्रू बाइबिल में पढ़ते हैं। और फिर भी यीशु किसी तरह से मसीहा के रूप में आए, लेकिन वह मसीहा नहीं जिसकी जनता उम्मीद कर रही थी क्योंकि वह कोई बाहरी दिखावा नहीं था, बल्कि यह मानव हृदय पर आंतरिक आक्रमण था। मुझे क्योंकि परमेश्वर का राज्य मौजूद है।

परमेश्वर का शासन और शासन यहीं है। इसलिए, जबकि नया नियम पुष्टि करता है कि यीशु मसीहा है, कम से कम उसके पहले आगमन में, लोगों को इनमें से कुछ चीजों के बारे में सोचने के लिए मजबूर होना पड़ा, यहां तक कि शुरू में उन्होंने जो सोचा था उससे भी अलग तरीके से। इसलिए, कुछ आश्चर्य हो सकते हैं।

अगला बिंदु जो मैं कहना चाहता हूँ, मैं किसी विशेष क्रम में नहीं कह रहा हूँ कि मैं भविष्यवाणी को कैसे समझ सकता हूँ, लेकिन मुझे तिथि निर्धारण, लंबे चार्ट, एक प्रकार की हठधर्मिता, एक

अनुचित हठधर्मिता और ऐसी चीज़ों के बारे में स्वस्थ संदेह होगा, जो अंततः, ठोस व्याख्या की तुलना में अटकलों तक सीमित हो सकती हैं। मैंने आपको 1840 के दशक में बोस्टन शहर में उस भयावह रात के बारे में बताया था जब विलियम मिलर ने प्रभु की वापसी की सटीक तिथि निर्धारित की थी। अब, आज हमारे पास ऐसे समूह हैं जो एडवेंट, सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट और एडवेंट क्रिश्चियन शब्दों का उपयोग करते हैं।

एडवेंट शब्द एक अनुस्मारक है कि प्रभु आ रहे हैं। वैसे, जब विलियम मिलर ने प्रभु की वापसी की तारीख तय करने की कोशिश की थी, तब लोग अटकलें लगा रहे थे क्योंकि न्यू इंग्लैंड में रिकॉर्ड पर सबसे खराब सर्दियाँ थीं, और लोग तरह-तरह की अटकलें लगा रहे थे। साथ ही, इस घटना के बहुत करीब एक जबरदस्त उल्कापिंड की बारिश हुई थी, इसलिए बहुत से लोग सोच रहे थे कि क्या यह युग का अंत हो सकता है। खैर, इनमें से कुछ असफल घटनाओं से उन लोगों में स्वस्थ संदेह पैदा होना चाहिए जो इस बात को लेकर इतने निश्चित हैं कि प्रभु कब वापस आने वाले हैं।

आप में से कुछ के माता-पिता और दादा-दादी आपको बताएंगे कि 1988 कब आया, यह इज़राइल राज्य की स्थापना के ठीक 40 साल बाद था। और हमारे पास एक राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध प्रचारक थे, वास्तव में, उनका अपना केबल टेलीविज़न कार्यक्रम है। आप उन्हें यहाँ गॉर्डन कॉलेज में हर दिन देख सकते हैं।

यह अभी भी जारी है। वे गॉर्डन कॉलेज आए और एक दीक्षांत समारोह में भाषण दिया। हालाँकि उन्हें अंतिम बातों पर विशेष रूप से पढ़ाने के लिए नहीं कहा गया था, लेकिन प्रलोभन बहुत ज्यादा था।

मुझे याद है कि मैंने उन्हें यह कहते हुए सुना था कि रूस अपना कदम उठाने जा रहा है, और सीरिया अपना कदम उठाने जा रहा है। उन्होंने कहा कि मध्य पूर्व में ये सभी चीज़ें इसलिए चल रही हैं क्योंकि यह एक पीढ़ी थी। जीसस के ओलिवेट प्रवचन, मैथ्यू 24, ल्यूक 21 और मार्क 13 के अनुसार, ये सभी चीज़ें होने जा रही हैं।

ये चीज़ें युग के अंत से जुड़ी हैं। जैसा कि यीशु ने एक पाठ में स्पष्ट रूप से कहा है, यह पीढ़ी तब तक नहीं मितेगी जब तक कि ये चीज़ें नहीं देखी जातीं, जो उसके दूसरे आगमन से जुड़ी हैं।

इसलिए, उस विशेष अवधि के लिए अटकलें बहुत अधिक थीं। इज़राइल राज्य की स्थापना 1948 में हुई, चालीस साल बाद, 1988 में।

बेशक, वर्ष 2000 में भी ऐसा ही हुआ। हर तरह के लोग बोल रहे थे। हर तरह के स्वयंभू भविष्यद्वक्ता अपने वस्त्रों के साथ यरूशलेम में दिखाई दे रहे थे।

सड़कों के कोनों पर अपना दावा करते हुए, पटरियों पर चलते हुए। अंत की घोषणा करते हुए। आखिरकार, यह वर्ष 2000 था।

जैसे वह लड़का जिसे भेड़िया कहा जाता था। भेड़िया। भेड़िया।

वुल्फ़. हमें इस बारे में बहुत-बहुत सावधान रहना होगा. भविष्यवाणी का एक और सिद्धांत.

भविष्यवाणी, खास तौर पर विदेशी देशों से जुड़ी भविष्यवाणी। मसीहाई भविष्यवाणी तो नहीं, लेकिन इनमें से कई भविष्यवाणियाँ सशर्त हैं। वे संगमरमर पर लिखी या तराशी हुई नहीं हैं।

भगवान मानवीय प्रतिक्रिया पर विचार करते हैं। अब्राहम जोशुआ हेशेल द्वारा भविष्यवक्ताओं पर लिखी आपकी पाठ्यपुस्तक में एक कैप्शन है। डेढ़ पेज की चर्चा।

इसमें कहा गया है कि कोई भी शब्द ईश्वर का अंतिम शब्द नहीं है। और वहाँ हेशेल इस धारणा को उजागर करते हैं कि जब कोई भविष्यवक्ता चालीस दिनों के अंतराल में कुछ कहता है, तो वह नष्ट हो जाएगा। इसके साथ हमेशा एक PS जुड़ा होता है।

वैसे, अगर आप पश्चाताप करते हैं, तो हम नीनवे के बारे में सुनाई गई इस विनाश की भविष्यवाणी को रद्द कर रहे हैं। पी.एस., अगर आप पश्चाताप करते हैं, तो यह उस संदेश का परिणाम बदल सकता है जो अभी दिया गया है। इस तथ्य से जुड़ा एक क्लासिक बाइबिल पाठ है कि इनमें से कई भविष्यवाणियाँ इस बात पर निर्भर करती हैं कि लोग कैसे प्रतिक्रिया देते हैं।

यिर्मयाह 18:7 से 10. मुझे वह अंश पढ़ने दीजिए। यिर्मयाह 18, श्लोक 7 से शुरू होता है। अगर कभी मैं घोषणा करता हूँ, यह परमेश्वर बोल रहा है, कि किसी राष्ट्र या राज्य को उखाड़ फेंका जाना है, गिरा दिया जाना है, और नष्ट कर दिया जाना है, और अगर वह राष्ट्र, जैसा कि मैंने चेतावनी दी है, अपनी बुराई से पश्चाताप करता है, तो मैं नरम पड़ जाऊँगा।

मैं पीछे हट जाऊँगा। मुझे NIV में शब्द 'रिलेन्ट' पसंद है, जो मुझे लगता है कि किंग जेम्स के पश्चाताप से कहीं ज़्यादा स्पष्ट है। ईश्वर के पश्चाताप की धारणा को समझना हमारे लिए बहुत ज़्यादा समस्याजनक है।

इसलिए, परमेश्वर कहता है कि वह नरम पड़ जाएगा और उस पर वह विपत्ति नहीं लाएगा जिसकी मैंने योजना बनाई थी। क्यों? क्योंकि जिस राष्ट्र को चेतावनी दी गई थी, वह पलट गया और अपना व्यवहार बदल दिया। फिर, श्लोक 9 में, वह इसका दूसरा पहलू कहता है।

अगर किसी और समय मैं घोषणा करता हूँ कि किसी राष्ट्र या राज्य का निर्माण और रोपण किया जाना है, और अगर वह मेरी दृष्टि में बुरा करता है और मेरी आज्ञा नहीं मानता है, तो मैं उसके लिए जो अच्छा करने का इरादा रखता हूँ, उस पर पुनर्विचार करूँगा। ठीक है, भविष्यवाणी की सशर्त प्रकृति की यह धारणा। इसलिए, हमें भविष्यवाणी को स्थिर नहीं समझना चाहिए; यह शब्द की परवाह किए बिना होने जा रहा है क्योंकि मानवीय प्रतिक्रिया, पवित्रशास्त्र संकेत देता है, किसी तरह से उस भविष्यवाणी के परिणाम को प्रभावित कर सकती है।

एक और सिद्धांत जिसका मैं उल्लेख करना चाहता हूँ, आम तौर पर पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच अंतर नहीं किया। पुराने नियम के भविष्यसूचक दृष्टिकोण से, उन्होंने भविष्य में झाँका; उन्होंने दूर तक देखा, और उनके दृष्टिकोण

से, यदि वे पुराने नियम में यहाँ खड़े थे और वहाँ देख रहे थे, तो दो पर्वत शिखर जहाँ वे खड़े थे, वहाँ से एक जैसे दिखते थे। पहला पर्वत शिखर पहले आगमन को संदर्भित करता है, मसीह के आगमन में प्रभु का आरंभ हुआ दिन, और दूसरा शिखर, प्रभु के पूर्ण होने का दिन।

प्रभु के दिन का क्या अर्थ है? खैर, जिस तरह से इसे नए नियम में इस्तेमाल किया गया है, प्रभु का दिन रात में चोर की तरह आएगा। बेशक, इसका संदर्भ मसीह के दूसरे आगमन से है। लेकिन पुराने नियम के दृष्टिकोण से, परमेश्वर बस इस धरती पर बुराई का न्याय करने, उन शत्रुओं को दंडित करने के लिए इतिहास में आने वाला था जिन्होंने उसका विरोध किया है, और फिर दूसरे, अपने लोगों को सही साबित करने, उन्हें बचाने, उनके लिए उद्धार का अपना अंतिम कार्य करने के लिए।

पुराने नियम के दृष्टिकोण से, इसे हमेशा एक ही कार्य के दो चरणों के रूप में नहीं देखा गया; जब आप जॉन द बैपटिस्ट या जॉन द मिकवा मैन को देखते हैं, जैसा कि स्टीफन वेइलैंड उन्हें यीशु के समय के यहूदियों पर अपनी पुस्तक में पुकारना पसंद करते हैं। जॉन वह व्यक्ति है जो मसीहा के लिए इस तैयारी में शामिल है। मैथ्यू अध्याय 3 में, और मैथ्यू वह व्यक्ति है जो पुराने नियम के भविष्यसूचक ग्रंथों और यीशु के आगमन के बीच उन संबंधों को जोड़ना पसंद करता है, यह मथियन समुदाय यहूदियों से भरा हुआ था जो सुनना पसंद करते थे, जैसा कि मैथ्यू 1.1 और 1.2 कहता है, येशु हामाशियाच, बेन डेविड, बेन अब्राहम की वंशावली का सुसमाचार।

और मत्ती 1.2 क्या कहता है? अब्राहम। मत्ती 1.1 में अब्राहम का ज़िक्र है। मत्ती 1.2 में अब्राहम का ज़िक्र है।

और दाऊद उस वंशावली में यीशु से जुड़ा पहला इंसान है। और मथियन समुदाय यह सुनना चाहता था। यह एक महत्वपूर्ण कड़ी थी।

अब, जब यूहन्ना मार्ग तैयार करने के लिए आता है, तो यूहन्ना ठेठ भविष्यवाणी भाषा में कहता है, हे सांपों के बच्चों, निन्दा करने वाली भाषा, इस्राएल के भविष्यद्वक्ताओं की तरह बोलो, नैतिक, आध्यात्मिक, धार्मिकता के अग्रदूत, हे सांपों की संतान, तुम्हें आने वाले क्रोध से भागने की चेतावनी किसने दी? पश्चाताप के अनुरूप फल उत्पन्न करो। यूहन्ना का बपतिस्मा पश्चाताप का बपतिस्मा था। ऐसा मत सोचो कि तुम अपने आप से कह सकते हो, हमारा पिता अब्राहम है।

यह वंश, शारीरिक वंश या प्राकृतिक वंश का मामला नहीं है। जॉन कहते हैं कि इसमें और भी बहुत कुछ है। आपको पिता अब्राहम की तरह जीने की ज़रूरत है।

धार्मिकता से जीवन जियें। विश्वास और आज्ञाकारिता में जियें। इसलिए, वह कहता है, मैं तुमसे कहता हूँ कि इन पत्थरों से परमेश्वर अब्राहम के लिए बच्चे पैदा कर सकता है।

कुल्हाड़ी पहले से ही पेड़ की जड़ पर है। बहुत नाटकीय। बिल्कुल पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की भविष्यवाणी के अर्थ में।

और जो पेड़ फल नहीं देता, वह काटा जाएगा और आग में झोंका जाएगा। मैं तुम्हें मन फिराव के लिए जल से बपतिस्मा देता हूँ। लेकिन मेरे बाद वह आने वाला है जो मुझसे ज़्यादा शक्तिशाली है, जिसकी जूतियाँ उठाने के लिए मैं योग्य भी नहीं हूँ।

वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। अब यह वह पाठ है जिसका मैं उल्लेख करना चाहता हूँ, विशेष रूप से पद 12, मत्ती 3.12। उसका फटकने वाला काँटा उसके हाथ में है। यह यीशु है।

और वह अपना खलिहान साफ करेगा, अपने गेहूँ को खलिहान में इकट्ठा करेगा और भूसी को कभी न बुझने वाली आग से जला देगा। यह भाषा स्पष्ट रूप से वह नहीं है जो आप सुसमाचारों में पढ़ते हैं कि यीशु ने अपने मिशन पर पहली बार पूरा किया। वहाँ की भाषा को उसके दूसरे आगमन की ओर पुनर्निर्देशित किया जाना चाहिए जब वह न्याय करने, शुद्ध करने और अपने द्वारा शुरू किए गए कार्य को अंतिम रूप देने के लिए आता है।

और जैसे आपको नए नियम को स्थगित युगांतशास्त्र के साथ पढ़ना है, वैसे ही आपको पुराने नियम में भी ऐसा करना होगा। क्योंकि कभी-कभी पुराने नियम के लेखक पहले आगमन के बारे में लिखते हैं। कभी-कभी, वे दूसरे आगमन को लिख देते हैं।

लेकिन उन्होंने इस पूरी घटना को इतिहास में परमेश्वर के आगमन के रूप में देखा, ताकि न्याय करने के साथ-साथ दावा किया जा सके, पुनःस्थापित किया जा सके, और कई तरीकों से उस कार्य को मुहरबंद किया जा सके जिसे उसने धर्मी और चुने हुए लोगों के बीच शुरू किया था। राष्ट्रों के सामने उनकी पुष्टि करने के लिए। इसलिए, भविष्यवक्ता किसी भी आगमन के बारे में बात कर सकते हैं।

और वे हमेशा यह अंतर नहीं करते थे। इसलिए, आप देख सकते हैं कि चीजें हमेशा सटीक नहीं होती हैं। एक और सिद्धांत है।

सावधान रहें कि आप भविष्यवाणियों को नियतिवादी या अत्यधिक नियतिवादी तरीके से न पढ़ें, या किसी भी भाग्यवादी तरीके से न पढ़ें। मान लीजिए कि आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जो मानते हैं कि बाइबल सिखाती है कि इज़राइल को अपनी राष्ट्रीय मातृभूमि पर अधिकार है। यह टोरा में शामिल है।

वहाँ एक रियल एस्टेट डीड है। क्यों? क्योंकि परमेश्वर ने उत्पत्ति की कहानियों के आरंभिक भाग में पिता अब्राहम से कहा था, मैं तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को यह भूमि बेरिट ओलम, एक शाश्वत वाचा के भाग के रूप में दूँगा। और वह भूमि उत्तर में फ़रात नदी से लेकर दक्षिण में मिस्र की नदी तक फैली हुई है।

अधिकांश विद्वान मिस्र की नदी को संभवतः वादी एल-अरिश मानते हैं, न कि नील नदी जिसे हम शुरू में मन में रखते हैं क्योंकि तट के साथ निश्चित रूप से इज़राइल की उपस्थिति ने कभी भी नील या डेल्टा क्षेत्र तक भूमि पर दावा नहीं किया है। अब, कोई यह कह सकता है कि इज़राइल

की सीमाएँ, उनकी सबसे बड़ी, में आधुनिक जॉर्डन का क्षेत्र शामिल था जहाँ मनश्शे की आधी जनजाति, जहाँ गाद और रूबेन सीधे जॉर्डन घाटी के पूर्वी तट पर बस गए थे।

यह उद्धरण का हिस्सा था, वादा किया हुआ देश। क्या आपको यहोशू का पहला अध्याय पढ़ना याद है? यहोशू मनश्शे, रूबेन और गाद के आधे गोत्र के लोगों से वादा चाहता था। उन्हें अपनी ज़मीन मिल रही है, इससे पहले कि इस्राएल जॉर्डन को पार करे।

वह उनकी विरासत थी। लेकिन वह उनसे एक वादा चाहता था कि चूँकि उन्हें अपनी विरासत पहले मिली है, इसलिए वे अपने भाइयों के साथ तब भी रहेंगे जब वे जॉर्डन पार करके जेरिको में जाएँगे और उस फसल का उत्सव मनाएँगे जब मन्ना बंद हो जाएगा, वह 40 साल का चमत्कार। इसलिए, उसके पास वह प्रतिबद्धता थी।

अब, अगर आधुनिक दुनिया में कोई कहता है, ठीक है, ये सीमाएँ हैं, भगवान द्वारा दी गई सीमाएँ, यह रियल एस्टेट धर्मशास्त्र है, दोस्तों। इज़राइल को आज पश्चिमी जॉर्डन के उस हिस्से में जाने का अधिकार है जो जॉर्डन घाटी से सटा हुआ है और उस ज़मीन पर कब्ज़ा कर सकता है। यह बाइबल में इज़राइल के लिए रियल एस्टेट वादे का हिस्सा है।

खैर, अगर आप इसे बहुत ही निर्णायक रूप से पढ़ते हैं, बिना न्याय और दया और करुणा के साथ इसे समझे, जो वर्तमान में वहाँ रहते हैं, तो यह बहुत ही भयावह बात होगी। वही बात, आज इज़राइल में कुछ लोग मानते हैं कि मंदिर पर्वत पर एक और मंदिर हो सकता है। आप पुराने शहर में मंदिर संस्थान नामक एक स्थान पर जा सकते हैं, जहाँ वे विभिन्न प्रकार के उपकरणों के अनुसंधान और विकास में शामिल हैं।

उनमें से कुछ को उम्मीद है कि वे भविष्य के किसी मंदिर के लिए मौजूद रहेंगे। लेकिन फिर से, अगर आप इसे निश्चित रूप से पढ़ते हैं, मान लीजिए कि आप यहजेकेल 40-48 पढ़ते हैं, तो शाब्दिक रूप से, यह नया मंदिर है। किस कीमत पर? क्या आप एक मस्जिद को गिराने जा रहे हैं जो 691 में पूरी हुई थी, डोम ऑफ द रॉक? 715 में, अल-अक्सा मस्जिद को मंदिर पर्वत का ताज पहनाया गया था।

यह सभी प्रकार की राजनीतिक कठिनाइयों से भरा हुआ है। यहाँ मेरा कहना यह है कि, प्री-मिलेनियलिस्ट को जिन चीज़ों के बारे में सावधान रहना चाहिए, उनमें से एक यह है कि अगर वे पुराने नियम में केवल उन चीज़ों को देखते हैं जो इज़राइल के बारे में भविष्य की ओर इशारा करती हैं और वे इसे पूर्व-लिखित इतिहास के रूप में पढ़ते हैं, तो वे संवेदनशील नहीं हो सकते हैं। उनके पास एक चार्टर है, और उनके पास एक योजना है।

यह हमारा है; बाकी सभी लोग इसलिए चले जाते हैं क्योंकि भगवान ने हमें इस ज़मीन पर अधिकार दिया है। हम मालिकाना हक के दस्तावेज़ रखते हैं। मुझे लगता है कि यहाँ एक सिद्धांत है जो बाइबल को निश्चित रूप से पढ़ने से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

और यह न्याय, नैतिकता और करुणा का सवाल है। आज अमेरिकी समाज में आपको कुछ चीज़ें पसंद नहीं आ सकती हैं, और आप खुद से कह सकते हैं, मैं चाहूँगा कि कोई और व्यक्ति पद पर

न हो या यह नीति जो इस सरकार ने अपनाई है, वह न हो। एक ईसाई के रूप में मैं इससे पूरी तरह असहमत हूँ, लेकिन आप समस्या का समाधान उन लोगों को हटाकर नहीं कर सकते जिन्होंने इसे लागू किया। या मैं कहूँगा कि आज इजरायल में, आत्मघाती बम विस्फोट कभी भी राजनीतिक विरोध का स्वीकार्य रूप नहीं है क्योंकि निर्दोष लोग नष्ट हो जाते हैं।

आपके पास बोलने के लिए एक ज़बान है और अगर आप विरोध करना चाहते हैं और अगर आप चीज़ों को बदलना चाहते हैं, तो ऐसा करने के लिए सही तरीके हैं। लेकिन आप अपने ख़ास एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए मासूमों की ज़िंदगी बर्बाद न करें। अगर आपको लगता है कि यह सही है।

तो, आज इसे समाप्त करते हुए, हमें सावधान रहना चाहिए कि हम बाइबल को इस तरह से न पढ़ें कि हम अपनी इच्छा दूसरों पर थोपें और कठिनाई पैदा करें, अनावश्यक कठिनाई, सिर्फ़ इसलिए कि भगवान ने ऐसा कहा है, मेरे पास इसके लिए आवाज़ है। और इसलिए, इसलिए, भगवान की आवाज़ या जिस तरह से मैं पवित्रशास्त्र पढ़ता हूँ, वह बाकी सब चीज़ों से ज़्यादा प्राथमिकता रखता है। हमें पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के अनुप्रयोग में संवेदनशील और संतुलित होना चाहिए।

इसलिए, हमें कभी-कभी लंबे परिप्रेक्ष्य को अपनाना पड़ता है और यह समझना पड़ता है कि इनमें से कुछ चीज़ों का तात्कालिक अनुप्रयोग अधिक विनाशकारी हो सकता है यदि हम उन्हें संवेदनशीलता से लागू नहीं करते हैं। आज के लिए बस इतना ही, और मैं बुधवार को वहीं से शुरू करूँगा।

यह डॉ. मार्व विल्सन द्वारा भविष्यवक्ताओं पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 6 है, भविष्यवक्ताओं को समझने के लिए व्याख्यात्मक सिद्धांत, भाग 2।